चैत्यवंदन भाष्य

॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं नमः ॥

॥ धुलेवातीर्थमण्डन श्री ऋषभदेवस्वामिने नमः ॥

श्री रावलातीर्थमण्डन श्री पार्श्वनाथस्वामिने नमः ॥

तिन्नि निसीही इक्कार तीसं १, संपय हवंति सगनवई २। सोलस पुण आगारा ३, दोसा इगवीस उस्सग्गे ४॥१॥

अहिगारा वि य बारस ५, दंडा पंचेव हुंति नायव्वा ६। तिन्नेव वंदणिज्जा ७, थोयव्वा हुंति चत्तारि ८॥२॥

[illegible] य निमित्त हुंती ९, पंचेव य हेयव्वो तहा भणिया। चिइवंदणम्मि नेयं नवनउय सयं च ठाणाणं ॥३॥

तिन्नि निसीही १, तिन्नि य पयाहिणा २, तिन्नि चेव य पणामा ३। तिविहा पूया ४ य तहा अवत्थतियभावणं ५ चेव ॥४॥

तिदिसि निरक्खणविरई ६, तिविहं भूमी पमज्जणं ७ चेव। वन्नाइतियं ८, मुद्दातियं ९, तिविहं च पणिहाणं १०॥५॥

इय दहतियसंजुत्तं वंदणयं जो जिणाण तिक्कालं। कुणइ नरो उवउत्तो सो पावइ निज्जरं विउलं ॥६॥

घर-जिणहर-जिणपूया-वावारच्चायओ निसीहितिगं। पुप्फ-ऽक्खय-थुईएहिं तिविहा पूया मुणेयव्वा ॥७॥

होइ छउमत्थ-केवलि-सिद्धत्तेहिं[1] जिणाणऽवत्थतिगं । वन्नत्थालंबणओ[2] वन्नाइतियं वियाणिज्जा ॥१२॥

जिणमुद्द-जोगमुद्दा मुत्तासुत्ती य तिन्नि मुद्दाओ । काय-मणो-वयणनिरोहणं च पणिहाणतियमेयं ॥१३॥

पंचंगो पणिवाओ थुइपाढो होइ जोगमुद्दाए । वंदण जिणमुद्दाए पणिहाणं मुत्तसुत्तीए ॥१४॥

दो जाणू दुन्नि करा पंचमगं होइ उत्तमंगं तु । सम्मं संपणिवाओ नेओ पंचंगपणिवाओ ॥१५॥

अन्नुन्नंतरअंगुलि कोसागारेहिं दोहिं हत्थेहिं । पिट्टोवरि कुप्परसंठिएहिं तह जोगमुद्द त्ति ॥१६॥

चत्तारि अंगुलाइं पुरओ ऊणाइं जत्थ पच्छिमओ । पायाणं उस्सग्गो एसा पुण होइ जिणमुद्दा ॥१७॥

मुत्तासुत्ती मुद्दा समा जहिं दो वि गब्भिया हत्था । ते पुण निलाडदेसे लग्गा, अन्ने अलग्ग त्ति ॥१८॥

दाहिण-वामंगठिओ नर-नारिगणोऽभिवंदए देवे । उक्किट्ठ सट्ठिहत्थुग्गहेण जहन्नेण करनवगं ॥१९॥

साहूण सत्त वारा होइ अहोरत्तमज्झयारम्मि। गिहिणो पुण चिइवंदण तिय पंच व सत्त वा वारा॥६॥

भोयणसमयम्मि तह य संवरणे।

अट्ठ-ट्ठ-नव-ट्ठ य अट्ठवीस सोलस य वीस वीसामा। मंगल-इरियावहिया-सक्कत्थयपमुहदंडेसु॥८॥

अट्ठेव संपयाओ नव य पयाइं च पंच अहिगारा। छ दुगुण सेस लहुआ नवकारे वण्णा अडसट्ठी॥९॥

दुग दुग चउरो सत्त य एगं पंचेव दस य एगं च। इरियावहियापयसंपयाओ बत्तीससंखाओ॥१०॥

इच्छ गम पाण ओसा जे मे एगिंदि अभिहया तस्स। इरियाविस्सामेसुं पढमपया हुंति नायव्वा॥११॥

तिन्नि सया तेआला इरियावहियाइ वन्नपरिसंखा। सव्वे वि मेलिया पुण काउस्सग्गेण सहियाओ॥१२॥

दो तिन्नि चउर पंच य पंच य पंचेव दुन्नि चउ तिन्नि। संपयनवगम्मि कमा तित्तीसपया उ सक्कत्थए॥१३॥

अरिहं आइगर पुरिसो लोगोऽभय धम्म अप्प जिण सव्वं। सक्कत्थयसंपयाणं पढमं उ लिंगणाइपयं ॥२४॥

दुग छग सत्तग नवगं तिग छग चउरो छगं च वीसामा। अरिहंतचेइआण स आलावा हुंति तेयाला ॥२५॥

अरिहं वंदण सद्धा अन्नत्थू सुहुम एव जा ताव। अरिहंतचेइयथए वीसामाणं पया पढमा ॥२६॥

आयपमाणा विरई तिसु वि पएसुं सुयम्मि निद्दिट्ठा। एवं बिइयपहाणा विहिणा चिइवंदणाभिहिया ॥२७॥

पढमसिलोगो उज्जोयगम्मि गाहाओ हुंति छच्चेव। सुयत्थए दो गाहा अंते दो चेव चित्ताइं ॥२८॥

सिद्धाईसंथवणे गाहाओ तिन्नि सुत्तनिद्दिट्ठा। गहदुगं आयरणा एवं पंचेव गाहाओ ॥२९॥

नवगं बत्तीसा वि य तित्तीस तियाल अट्ठवीसा य। सोलस वीस कमेण य आलावा मंगलाईसु ॥३०॥

दो दो चउ चउ तिसया सगनउई तीस नवइ अब्भहिया। अडतीसा छायाला दंडेसु जहक्कमं वन्ना ॥३१॥

अन्न नीस खास छीए जंभा उड्डुए [illegible] पित्ते य। सुहुमंग खेल दिट्ठी अग छिंद अहि बोहि आगारा ॥२२॥

घोडग लया य खंभे कुड्डे माले य सबरि बहु नियले। लंबुत्तर थण उद्धी संजइ खलिणे य वायस कविट्ठे ॥२३॥

सीसोकंपिय मूई अंगुलिभमुहाइ वारुणी पेहा। नाहीकरयलकुप्पर उस्सारिय पारियम्मि थुई ॥२४॥

नमु जे अरिहं लोगे स पुक्खर तम सिद्ध जो उ चत्ता वें। बारस अहिगाराणं नेया पढमक्खरा एए ॥२५॥

दुन्नेग दुन्नि दुन्नि पंचेव कमेण हुंति अहिगारा। सक्कत्थयाइसु इहं थोयव्वा विसेसदंडाओ ॥२६॥

अरिहंत सिद्ध आगम तिन्नेव य इत्थ वंदणिज्जा उ। नामं ठवणा दविए भावे य जिणा चउक्केया ॥२७॥

इह नामजिण चउत्थे, ठवणा तिय, पंच दव्वजिण बीए। पढमे छट्ठे नवमे दसमे इक्कारसे य भावजिणा ॥२८॥

इय नव अहिगारेहिं एए मे वन्निया जिणा सव्वे। सुय सत्तम सिद्धऽट्ठम वेयावच्चाण बारसमो ॥२९॥

वंदण पूयण सक्का सम्मा बो निक निमित्तछकं तु। सद्धा मे धिइ धारण अणुपेहा पंच हेऊ य ॥४०॥

नवकारेण जहन्ना, दंडगथुइजुगल मज्झिमा नेया। संपुण्णा उक्कोसा विहिणा खलु वंदणा तिविहा ॥४१॥

इय पडिपुन्ना विहिया विहिणा चिइवंदणा सढ्ढोहिं। बहुभवसंचियकम्माण वि निज्जरं कुणइ ॥४२॥